वर्तमान परिदृश्य में श्रीलाल शुक्लका साहित्यिक यथार्थ

कैलाश नाथ यादव,

शोधार्थी,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, (उ0प्र0)

डॉ0 प्रमोद कुमार सिंह,

एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ विश्वविद्यालय,लखनऊ (उ0प्र0)

शोध सारांश

प्रत्येक युग की सरहद में अनुभूति परिवर्तित होती है, जिसके साथ साहित्य में बदलाव आना एक स्वभाविक प्रक्रिया है। आज का साहित्यकार न ही दरबार द्रष्टा है और न ही राजा महाराजाओं का पथ प्रदर्शक। वह युग द्रष्टा और सृष्टा को कारगर भूमिका निभाते हुए मनुष्य का युग जीवन से परिचय कराता है तथा उसमें निहित मनुष्यता को जगाकर मानवीय सद्भावनाओं का संचार करता है। उल्लेखनीय है कि मानव जीवन रूपी नीव पर ही साहित्य की इमारत खड़ी होती है और फिर साहित्य जीवन को ही उसकी समग्रता में प्रस्तुत करके हमें जीवन जीने की कला बताता है। हर उत्कृष्ट रचना युग यथार्थ ही अटल सत्य होती है, जिससे कोई भी रचनाकार पलायन नहीं कर सकता है।

Keywords : *श्रीलाल शुक्ल, यथार्थ, अनुभूति, मानवीय सद्भावना*

मानव सभ्यता के विकास में साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। विचारों ने साहित्य को जन्म दिया और साहित्य ने मनुष्य की विचार धारा को गतिशीलता प्रदान की। उसे सभ्य एवं शिक्षित बनाने का कार्य साहित्य ने ही किया। किसी भी समाज में परिवर्तन का कारण साहित्य ही है। साहित्यकार समाज में व्याप्त कुरीतियों, अभावों तथा विषमताओं आदि का उल्लेख अपनी रचनाओं के माध्यम से करता है। साहित्यकार और समाज एक दूसरे से बंधे होते है। समाज में जो कुछ होता है, उससे साहित्यकार अछूता नहीं रहता है, क्योंकि साहित्य का मुख्य स्रोत समाज होता है। साथ ही साथ अपनी लेखनी के माध्यम से समाज को नई सोच और नयी दिशा प्रदान करता है। उसमें समाज पर पड़ रहे प्रभाव को साफ–साफ देखा जा सकता है। एक अच्छा साहित्यकार अपने परिवेश या समाज में फैली विसंगतियों विडम्बनाओं, परम्पराओं और संस्कृति आदि का प्रत्यक्ष रूप से साथी होताा है। उसी प्रकार लेखक श्रीलाल शुक्ल जी अपने परिवेश और समाज से अच्छी तरह परिचित थे और उसे अपने पैनी दृष्टि से उसे देखा, समझा और उसे अपने कृतित्व के माध्यम से पाठक के हृदय को अन्तर्भूत किया।

श्रीलाल शुक्ल जी उस परम्परा के प्रतिनिधि लेखक है, जो भारतीय इतिहास के कई कालखण्डों से होकर गुजरता है। प्राचीन, मध्य और आधुनिक को जिस कसौटी पर चाहे आप कसकर उन्हें देख सकते हैं। देखने का आधार उनके विचार है, उनके भाव है, और उनकी यथार्थपरख व्यंग्य रचनाएं तथा उनका विलक्षण

समझ है। श्रीलाल शुक्ल का समय गद्य लेखन का समय था और गद्य साहित्य की सीधा सम्बन्ध उस समय की बोलचाल तथा रोजमर्रा से जुड़ी जिन्दगी और सीधी तरह से कहा जाये तो वह यथार्थ की गहरी उथल–पुथल एवं उधेड़ बुन से है। शुक्ल जी हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ व्यंग्यकार थे। वे व्यंग्य शिल्पी के रूप में प्रसिद्ध है। अपनी प्रतिभा, परिश्रम, लगन और संघर्ष के क्षमता के बल पर साहित्य सृजन के शिखर पर पहुंचने वाले साहित्यकारों में उनका उच्चतम स्थान है। इन्होंने कहानी उपन्यास निबन्ध आदि विधाओं में व्यंग्य का तीखा वर्णन किया है।

श्रीलाल शुक्ल जी ने अपनी रचनाओं में प्रतीकात्मकता, ग्रामीण और शहरी परिवेश के दृष्टिकोण आदि का प्रयोग किया है। जो कि उनके 'राग दरबारी' उपन्यास में दिखाई देता है। इसकी कथावस्तु शिवपालगंज नामक एक गाँव के इर्द–गिर्द तक सीमित है। इसका मुख्य पात्र वैध जी है, जिनके माध्यम से शुक्ल जी ने समाज में व्याप्त, अराजकता, भाई– भतीजावाद, अवसरवादिता, लूट–खसोट, भ्रष्टाचार, प्रशासनिक व न्यायिक विसंगतियों को कुशलतापूर्वक चित्रिंत किया है। शुक्ल जी रागदरबारी उपन्यास के संदर्भ में कहते है। ''रागदरबारी का सम्बन्ध एक बड़े नगर से है, कुछ दूर बसे हुए गाँव की जिन्दगी से है, जो आजादी के बाद प्रगति और विकास के नारों के बावजूद, निहित स्वार्थों और अनेक अवांक्षनीय तत्वों के आघातों के सामने घिसट रही है। यही उसकी जिन्दगी का दस्तावेज है।''[1]

श्रीलाल शुक्ल का प्रथम उपन्यास 'सूनी घाटी का सूरज' है। इस उपन्यास में इन्होंने भ्रष्टाचार, ग्रामीण परिवेश आदि का यथार्थ चित्रण किया है। ग्रामीण जीवन में बचपन बिताने वाला रामदास अभावग्रस्त किसान का बेटा है। ग्रामीण जीवन की अनेक समस्याएँ वह झेल चुका है। उपन्यास में शोषण के सभी क्षेत्रों में पूँजीवादी मनोवृत्ति के विभिन्न रूपों का खुला चित्रण है। 'अज्ञातवास' उपन्यास में ग्रामीण जीवन की बिडम्बना तथा नगरीय जीवन की बनावटी सभ्यता व इसके आरोपित रूप का सूक्ष्म वर्णन है। इसमें रजनीकान्त और उसकी पत्नी रानी का जीवन चित्रण है। सम्पूर्ण उपन्यास में मध्यवर्गीय पारिवारिक संबंधों की कटुता और मान की भावना के गिरते स्तर तथा असहाय किसानों पर जमींदारों द्वारा शोषण का यथार्थ चित्रण मिलता है। श्रीलाल शुक्ल ने ग्रामीण जीवन में फैले शोषण, आतंक, जुल्म तथा पारास्परिक वैमनस्य का सटीक, बेधड़क तथा वास्तविक चित्रण इस उपन्यास में किया है। ''मन में एक आकांक्षापूर्ण आकुलता का ज्वार–सा उठता हैं जो इस अपरूप कथा के भार को बहाकर उसे किसी अव्यक्त अंतराल में फेक देता है। उसके मुँह की करूण कोमलता में एक चांदनी रात ढुलक आती है। जो रात कभी ढलती नहीं। कभी उसे सोने नहीं देती।''[2]

शुक्ल जी ने अपने कई व्यंग्य लेखों और उपन्यासों में शिक्षा व्यवस्था की पर्ते उधेड़ी है। खासकर रागदरबारी में उन्होंने शिक्षा व्यवस्था के बीमारू स्वरूप पर करारा प्रहार कर उसका यथार्थ चित्रण किया है। किसी भी सभ्य समाज के विकास की धुरी शिक्षा होती है। किन्तु हमारे देश में शिक्षा के क्षेत्र में भयंकर भ्रष्टाचार ने अपनी जड़ें जमा ली है। भू माफिया की तरह ही आज शिक्षा माफियाओं का एक अलग वर्ग बन गया है। शिक्षा क्षेत्र अब एक तरह से बहुत बड़ा व्यापार बन गया है। शिक्षा का क्षेत्र आज हमारे देश में मोटी कमाई के क्षेत्र के रूप में देखा जाता है। शुक्ल जी ने अपने उपन्यास 'पहला पड़ाव' में लिखा है कि ''न घूस दी थी, न ऊँची सिफारिस इसलिए इंटरव्यू में फेल होना ही था। पर धुप्पल के भरोसे चला गया था क्योंकि घूस, सिफारिश, गुटबन्दी, गुण्डागर्दी के तर्क जहाँ रोज चलते है, वहां कभी–कभी बिना तर्क के धुप्पल भी चला जाता है।''[3]

शुक्ल जी स्वयं एक बड़े साहित्यकार है इसलिए उन्हें समाज से सीधा सरोकार रहा है। उनका सम्बन्ध ऐसे तमाम साहित्यकारों से जिनके बारे में या जिनके आचरण के विषय में उन्होंने अपवने रचनाओं में लिखा है। साहित्य जगत की इन विसंगतियों को उन्होंने करीब से देखा, जिया और महसूस किया है। रमेशचन्द्र शाह अपने संस्मरण ''श्रीलाल शुक्ल पत्रों में'' में लिखा है कि–''श्रीलाल शुक्ल में लेखकीय प्रतिभा के साथ–साथ एक और प्रतिभा भी थी, संवाद संलाप की प्रतिभा जो बहुत कम लेखकों में पायी जाती है।''[4]

शुक्ल जी की लेखनी यथार्थपरख, प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं। प्रत्येक रचना में कथावस्तु की पकड़ मजबूत और दो टूक बात कहने का साहस और जिन्दगी की सूक्ष्म से सूक्ष्म बाते समझाने की कोशिश की है। उनका राग दरबारी उपन्यास व्यंग्य मात्र न होकर जीवन के सत्य से अपने आप से जीवंत और प्रत्यक्ष साक्षात्कार कराता है। वास्तव में राग दरबारी उपन्यास ग्रामीण जीवन का दस्तावेज है। सामाजिक राजनीतिक दुराचारों और यथार्थ के अन्तर्विरोधी पक्षों के वर्णन में तीक्ष्ण संवेदना और व्यंग्यात्मकता की पैनी धार को प्रौढ़ रूप विकसित करने की विशिष्टता राग दरबारी की अपनी मौलिकता है। शुक्ल जी अपने उपन्यास 'राग दरबारी' के माध्यम से उस समय की शिक्षा व्यवस्था पर तीखा प्रहार किया है। और कहते है कि ''यहाँ से इण्टरमीडिएट पास करने वाले लड़के सिर्फ इमारत के आधार पर कह सकते थे कि हम शान्ति निकेतन से भी आगे है, हम असली विद्यार्थी है, हम नहीं जानते कि बिजली क्या है, नल का पानी क्या है, पक्का फर्श किसको कहते है, सैनिटरी फिटिंग किस चिड़ियाँ का नाम है।''[5] राग दरबारी का मोतीराम मास्टर कक्षा में पढ़ाते कम है, और ज्यादा समय अपने चक्की को समर्पित करते है। वर्तमान समय में ज्यादातर शिक्षक मोतीराम ही है, नाम भले ही कुछ हो, ट्यूशन लेते है, दुकान चलाते है और तरह–तरह के निजी धंधे करते है। छात्रों को पढ़ाने के लिये उनके लिये समय ही कहाँ बचता है। शुक्ल जी कहते है कि ''वर्तमान शिक्षा पद्यति रास्ते में पड़ी हुई कुतियां है, जिसे कोई भी लात मार सकता है।''[6]

भारतीय समाज में जहाँ एक ओर जाति और वर्ग की भयानक कहानियाँ लोगों को बाँटती है वहाँ एक साहित्यकार की हैसियत से मेरा दृष्टिकोण बिल्कुल साफ है। कहीं न कहीं प्रत्येक संवेदनशील साहित्य कार्य को इस देश की गरीबी, शोषण, शोषित वर्ग, दलित वर्ग आज की समस्या से जोड़ना होगा। वर्गीय विषमता, शिक्षा, खेती बुनियादी सुविधाएँ, सामाजिक मान प्रतिष्ठा पर अपना प्रभाव डालती है। शुक्ल जी ने जहाँ 'मकान' और 'अज्ञातवास' में इस विसंगति पर प्रकाश डाला है, वही 'सूनी घाटी का सूरज', राग दरबारी में ग्रामीण परिवेश में इसके आयामों को प्रकट किया है। गाँव का किसान गरीबी, बीमारी और भूख से घिरे रहता है, अज्ञातवास' उपन्यास में एक गाँव का किसान कहता है। ''आप हमारे बारे में कुछ नहीं जानते। यह घसीटे वनमानुषों की तरह झोपड़ी में पड़ा रहता है। दमा में हाँफता रहता है। ये मंगरू, लालू, लोटन इनके घर दो–दो दिन के बाद चूल्हा जलता है।''[7]

शुक्ल जी ने अपने कई कृतियों के माध्यम से राजनीति में मौजूद अनेक विसंगतियों को उजागर किया है। इनके अनुसार राजनीति स्वार्थनीति में बदल गयी है। जो जोड़–तोड़ गुटबाजी, किसी तरीके से सत्ता प्राप्त करना और साम्प्रदायिक दंगा भड़काना इनका धर्म हो गया है। इन्होंने अपने साहित्य में इन विसंगतियों करारी चोट की है। क्योंकि प्रत्येक नेता एक दूसरे को भ्रष्ट सिद्ध करने की पूरी कोशिश करता है। नेता और भ्रष्टाचार एक दूसरे के पर्याय बन चुके है। धार्मिक भेद–भाव पैदा करना, लोगों को आपस में लड़वाना, अलग–अलग कारणों से लोगों

में मतभेद पैदा करना, जनता को वोट बैंक समझना यही राजनेताओं का वास्तविक गुण है। जिसमें शुक्ल जी ने वर्तमान राजनीति के भ्रष्ट चरित्र को उजागर कर उसमें व्याप्त भ्रष्टाचार, सत्ता लोलुपता, गुटबाजी, भाई–भतीजावाद तथा अनेक प्रवृत्तियों का उल्लेख अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। तथा आम जन मानस के बीच उनकी पोल खोलने का प्रयास किया है।

शुक्ल जी समाज के सभी पक्षों आर्थिक सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक तथा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय आदि सभी विषयों को अपनी रचनाओं में उल्लेख किया है। वे समाज के प्रत्येक क्षेत्र को अपनी खुली आँखों' से झाँक आये थे, इसलिए वे समाज में फैले भ्रष्टाचार, शोषण न्याय व्यवस्था आदि पर तीखा प्रहार किया है। शुक्ल जी ने स्थानीय गुटबंदी और दुराचरण पर करारी चोट की है।–''देखने में वह अच्छे व्यवहार का मितभाषी युवक है, पर वास्तव में वह स्थानीय गुटबंदी और षड्यंत्र को प्रोत्साहन देने लगा है। इसी अल्पकाल में उसके विरूद्ध अत्यधिक मदिरापान और दुराचरण की शिकायत आयी है। ऐसे व्यक्ति को फैक्ट्री में किसी उत्तरदायित्व पर पर रखना किसी भी समय अवांक्षित परिस्थितियाँ पैदा कर सकता है।''[8]

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि साहित्यकार और साहित्य में अभिन्न सम्बन्ध होता है। साहित्यकार सामाजिक जीवन के यथार्थ को ज्यों का त्यों अंकित नहीं करता बल्कि वह उसे व्यवस्थित रूप से चित्रित कर अपने विचारों और अनुभूतियों के माध्यम से एक प्रतिबिम्ब उभारता है। और समाज में व्याप्त सामाजिक बुराईयों को अपने लेखनी के माध्यम से आमजन मानस के बीच प्रस्तुत करता है। साहित्यकार, समाज में घटित होने वाली घटनाओं तथा परिस्थितिजन बदलाव को आम जनमानस तक पहुंचाने का कार्य करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राग दरबारी का राजनैतिक संदर्भ, सीमा मिश्रा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं0 2019 पृ0 64
2. अज्ञातवास, श्रीलाल शुक्ल, राजपाल एण्ड सन्स सं0 2017 पृ0 35
3. श्रीलाल शुक्लः व्यंग्य के विविध आयाम, डॉ0 अर्चना वर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली सं0 2019 पृ0 165
4. साहित्य अमृत, संपादक त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी, आसफ अली रोड, नई दिल्ली जून 2016 पृ0 34
5. राग दरबारी, श्रीलाल शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 2017 पृ0 14
6. राग दरबारी, श्रीलाल शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सं0 2017, पृ0 9
7. अज्ञातवास, श्रीलाल शुक्ल, राजपाल एण्ड संस सं0 2017 पृ0 53
8. श्रीलाल शुक्ल : व्यंग्य के विविध आयाम, डॉ0 अर्चना दूबे, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, सं0 2019 पृ0 103